ऑडियो नम्बर-202 **कम्पिला ओम् शांति** 5.06.86 **प्रातः क्लास**

सभी बच्चे याद में बैठे हैं। मन्मनाभव- यह संस्कृत अक्षर वास्तव में हैं नहीं। क्या मतलब? ये संस्कृत के अक्षर नहीं हैं या वास्तव में बाप ने ये संस्कृत अक्षर नहीं बोले हैं? बाप तो हिंदी भाषा में बोलते हैं। बाप ने जब सहज राजयोग सिखाया है तब यह संस्कृत अक्षर बोले नहीं हैं। तो ये 'मन्मनाभव' किसने बोला? भक्तिमार्ग के शास्त्रों में लिखा हुआ है- 'मन्मनाभव' और शास्त्रों में कहाँ की यादगार लिखी हुई है? संगमयुग की। तो संगमयुग में ज़रूर बाप ने जो याद की यात्रा सिखाई है, उसका रिज़ल्ट है- क्या? मेरे मन में समा जा। मत्, मना, भव; मत् माना मेरे, मना माना मन में, भव माना समा जा। मेरे मन में समा जा माना अपने मन के संकल्पों को मेरे मन के संकल्पों में समा दे , डूबो दे; जो बाप का संकल्प सो बच्चे का संकल्प। तो बाबा ने तो बात बताई कि ये जो तुण्डे-2 मतिर्भिन्ना है, सबकी बुद्धि में अलग-2 तरह की बातें भरी हुई हैं-आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में, सृष्टि के बारे में, सारी दुनिया के बारे में-वो सब झूठ-ही-झूठ फैला हुआ है। सत्य तो बाप ही आ करके बतलाता है। तो जो सत्संकल्प हैं परमात्मा बाप के, उस संकल्पों में सब बच्चों के संकल्प समा जाएँ, जिसे उन्होंने लीन होना कह दिया है।

तो यह संस्कृत अक्षर जानते नहीं हैं। बाप तो हिंदी में ही समझाते रहते हैं। क्यों, हिंदी में ही क्यों समझाते? किसकी भाषा हिंदी है? जिस तन में (पहले-2) प्रवेश किया, उसकी भाषा हिंदी या सिंधी थी? ब्रह्मा बाबा की भाषा हिंदी थी या सिंधी थी? सिंधी भाषा थी, वो तो हिंदी लिखना भी नहीं जानते। ईशु बहन सिंधी अक्षरों का अनुवाद करती थी। लेटर जो बाबा के आते थे, अभी भी हैं जहाँ जिनके पास, तो ऊपर सिंधी भाषा में लिखा होता था और नीचे ईशु बहन उसका अनुवाद करके लिखती थी। तो ब्रह्मा बाबा की ओरिजिनल भाषा कौन-सी हुई सिंधी हुई।

तो बेहद का बाप हिंदी में क्यों समझाते हैं? हाँ, कि जो आदिरथ था, जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देते थे, ड्रिल कराते थे, टीचर बन करके बैठते थे- उनकी भाषा हिंदी थी और 'जो आदि सो अंत।' अंत में भी जो मुकर्रर रथ संसार के सामने प्रत्यक्ष होता है परमात्म-पार्टधारी के रूप में, वो भी हिंदी भाषावासी होता है, मदर टंग हिंदी होती है। तो बाप तो हिंदी में ही समझाते रहते हैं।

भल यह रथ हिंदी, सिंधी अथवा इंगलिश जानने वाला है; परंतु बाप समझाते हिंदी में हैं। जो जिस धर्म का है उनकी अपनी भाषा है। हिंदी भाषा ही चलती है। कहाँ? भारत (में)। यह भाषा समझना सहज है। जब परमात्मा आ करके सिखाता ही सहज राजयोग है, तो भाषा भी कैसी होगी? सहज-ते-सहज

दुनिया की अगर कोई भाषा है, तो हिंदी है सबसे सहज। क्यों? क्योंकि इसमें अक्षर का जो भी उच्चारण है, जैसा उच्चारण है वैसी ही उसकी लिखावट है; और भाषाओं में ऐसा नहीं है

और यह स्कूल भी वंडरफुल है। इसमें कोई भी कागज़, पेंसिल वा पेन आदि की दरकार नहीं रहती है। यहाँ तो सिर्फ़ एक अक्षर को याद करना है, (बेहद) बाप को याद करो। गॉड को अथवा ईश्वर को अथवा परमपिता परमात्मा को कोई याद न करे- यह मुश्किल है। चाहे दुनिया की कितनी भी बड़ी-ते-बड़ी नास्तिक आत्मा ही क्यों न हो; लेकिन जो नास्तिक से भी नास्तिक हैं, अंत में जब विनाश होगा, तो सब सरेण्डर हो जाएँगे, सबको अनुभूति होगी कि गॉडफादर है ज़रूर; क्योंकि प्राप्ति उसी से होनी है। बाकी सब धोखा दे जाएँगे।

तो सभी याद करते हैं; परंतु उनकी पहचान नहीं है। किनकी? कौन बोल रहा है? सुप्रीम सोल शिव ही तो बोल रहा है और किसके तन में बोल रहा है? ब्रह्मा के तन में। सो ब्रह्मा के तन के बाजू में ही बैठने वाला (बेहद का बाप) बोल रहा है, तो 'उनकी' क्यों कहा? सभी याद करते हैं; परंतु उनकी पहचान नहीं है। उनकी माना किनकी? भविष्य में जब विनाश होगा, तो विनाश के पीरियड में सारी दुनिया जिसको याद करेगी, उस स्वरूप के लिए इशारा दिया। तो वो स्वरूप भविष्य के लिए बताया, दूर है। ब्रह्मा के रूप में जो पार्ट बजाया, वो (परमपिता+) परमात्मा बाप का पार्ट नहीं, माँ का पार्ट है और उस माँ के (दिखावटी सिगल) रूप को सारी दुनिया याद नहीं करती है। विदेशी तो माता को मानते ही नहीं। गॉडमदर नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे? गॉडफादर।

तो बाप ही आ करके अपनी पहचान देते हैं। बाप की पहचान बाप के सिवाय और कोई नहीं दे सकता। जैसे दुनिया में क्या होता है? बाप की पहचान माँ देती है, सब(तब) बच्चों को पता चलता है कि ये हमारा बाप है और यहाँ, बाप की (पूरी) पहचान माँ भी नहीं दे सकती। माँ माना यहाँ कौन है माँ? ब्रह्म+माँ। तो ब्रह्मा को भी पता नहीं; क्योंकि ब्रह्मा भी उस रचयिता बाप की रचना है । तो बाप आ करके अपनी पहचान देते हैं। ऐसे नहीं कि ब्रह्मा के तन में आते हैं और चले जाते हैं, फिर पहचान कोई दूसरे देते रहते हैं, सारी दुनिया को। नहीं। बाप खुद ही आ करके अपने बच्चों को अपनी पहचान देते हैं। बाप के सिवाय बाप की पहचान और कोई दे नहीं सकता। ये भी बाप के पार्ट की विशेष पहचान है।

शास्त्रों में जो कल्प की आयु इतनी लम्बी लिख दी है, वह बाप आ करके समझाते हैं- इतनी लम्बी आयु तो है नहीं, है तो 5000 वर्ष। तो इतनी लम्बी आयु क्यों लिख दी? कारण क्या है?

शूटिंग पीरियड की बात है। सतयुगी शूटिंग ड्रामा का फर्स्ट सीन है, उसे शूट करने में ज़्यादा टाइम लगता है और दूसरे युगों की शूटिंग धीरे-2 कम टाइम में होती है। फर्स्ट सीन की शूटिंग में ज़्यादा साज़-सामान इकट्ठा करना पड़ता है और संदेश देने वाली आत्माओं की संख्या भी कम होती है; बाद में तो संदेश देने वालों का मल्टीप्लीकेशन होता रहता है; इसलिए शास्त्रों में कलियुग की आयु सबसे छोटी और कलियुग से द्वापर की दुगुनी, त्रेता की तिगुनी और सतयुग की चौगुनी आयु दिखाई गई है। तो वो (पु.संगम) यहाँ से कनेक्टेड है, शास्त्रों में जो कल्प की आयु इतनी लम्बी लिखी है, वो समझाना कोई बड़ी बात भी नहीं है। अहिल्याएँ, बूढ़ी माताएँ वो क्या समझेंगी? है तो यह बहुत सहज, कोई छोटी बेबी भी समझ सकती है। नहीं तो (पुरुषोत्तम) अक्षर कोई नया नहीं है।

शिव के मंदिर में जाते हैं, तो बुद्धि में आता है कि वो बाप कब आते हैं? वो शिव कैसे है? वह तो निराकार है। सभी मनुष्यमात्र कहते हैं- बाबा, शिव+बाबा। बुद्धि कहती है- हम आत्माओं का बाप एक है। क्या सभी मनुष्यमात्र 'बाबा' कहते हैं शिव को? जो मनुष्य-आत्माओं का एक पिता है, उसको सब 'बाबा' कहते हैं? दुनिया में कहते हैं? नहीं। फिर क्यों कहा कि सभी मनुष्यमात्र कहते हैं 'बाबा'? भल अभी नहीं कहते हैं; लेकिन लास्ट में सब कहेंगे- बाबा; क्योंकि अभी सबकी बुद्धि इस योग्य नहीं है कि उनको मनुष्य कहा जा सके। मनुष्य किसे कहा जाता है? मनुष्य कहा ही जाता है, मनु की औलाद को। जैसे विष्णु के फॉलोअर्स को वैष्णव, शिव के फॉलोअर्स को शैव, ब्रह्मा के फॉलोअर्स को ब्राह्मण कहा जाता है, तो ऐसे ही मनुष्य कहा जाता है- मनु की औलाद। मनु अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा, (सही) मनन-चिंतन करने वाला (पहला आदमी आदम) और मनन-चिंतन करने वाले की औलाद भी कैसी होगी? मनन-चिंतन करने वाली (ही) होगी। वो मनुष्य ही क्या जो अपने मन (बुद्धि) का उपयोग न करे। मन निश्चल हो जाए, जड़ हो जाए, तो मनुष्य कैसे कहेंगे? मनुष्य और जानवर में क्या फर्क होता है? मनुष्य का मन चलता है, बुद्धि चलती है और जानवर की मन-बुद्धि चलायमान नहीं होती। तो मनुष्यमात्र कहते हैं- बाबा। जिनकी भी मनन-चिंतन-मंथन करने की रग होगी, वो उस बाबा को पहचानेंगे और उसको 'बाबा' कहेंगे।

बुद्धि अभी कहती है- हम आत्माओं को एक बाप है। सभी जीव की आत्माएँ जो शरीर में निवास करती हैं, बाप को याद करती हैं। सब धर्म वाले जो भी हैं, सब परमपिता परमात्मा को याद ज़रूर करते हैं। क्यों? ज़रूर सब धर्म वालों को उस परमपिता परमात्मा बाप से कभी (बेहद की) प्राप्ति हुई ज़रूर है,

तो याद करते हैं। याद उसी को किया जाता है जिससे पहले कभी प्राप्ति हुई हो। जो (सुख-शांति की) प्राप्ति और किसी से दुनिया में नहीं हो सकी, वो प्राप्ति (परमपिता+) परमात्मा बाप से होती है। तो ये बुद्धि में छाप पड़ जाती।

वह बाप है परमधाम में रहने वाला। कैसे धाम में रहता है? जो परे-ते-परे है। उससे जास्ती परे कोई रहने वाला है नहीं, वो सबसे परे हो करके रहता है। उसको क्रॉस कोई नहीं कर सकता। हम भी वहाँ के रहने वाले हैं।

तो अब सिर्फ़ (उसी बेहद के एक) बाप को याद करना है। चाहते भी हैं हम पावन बनें। बुलाते भी हैं- (खास भारत में कि) हे पतित को पावन करने वाले, आओ। किसलिए बुलाते हैं और महिमा क्या करते हैं? बुलाने का मक्सद क्या? पतितों को पावन करने के लिए आओ या ये कहते हैं कि ज्ञान सुनाने के लिए आओ? ज्ञान सुनाना- ये (ज्ञान) तो एक साधन है; ज्ञान वास्तव में साध्य नहीं है। ज्ञान भी किसलिए सुनाओ? ताकि बाप की पहचान हो जाए, जो पावन बनाने वाला है। ज्ञान माना पहचान, ज्ञान माना जानकारी और (असली) जानकारी अगर नहीं हुई, तो ज्ञान काहे का! और, पहली-2 जानकारी किसकी? पहली-2 जानकारी (कम्बाइंड) बाप की, (सुप्रीम) आत्मा की और इस ड्रामा की, सृष्टि-चक्र की। तो बोला कि हे पतित+पावन, आओ।

नई दुनिया पहले पावन थी; अब फिर पुरानी हो गई है। इन(दुखदाई हिसक को) कोई नया कहेंगे नहीं। भारतवासी जानते हैं, नए भारत में देवी-देवताएँ (बेहद सुख-शांति में) राज्य करते थे। जब नया भारत था, तो उसके आगे क्या था? ज़रूर संगम है। इससे भी सहज अक्षर कहना चाहिए- नए के आगे पुराना था। संगम को मनुष्य इतना समझ नहीं सकते हैं। न्यू वर्ल्ड, ओल्ड वर्ल्ड और इसके बीच को फिर कहते हैं संगम(युग)।

तो (बेहद) बाप के लिए ही कहते हैं कि हे पतित-पावन आओ और आ करके हमको पावन बनाओ। ये 'पतित-पावन' अक्षर परमपिता+परमात्मा के सिवाय और किसी के लिए नहीं कह सकते। कहते हैं- हम पतित बन गए हैं। नई दुनिया में तो कोई पुकारेंगे नहीं। अभी तुम्हारी समझ में आ गया है। यह भारत पावन था। कहते हैं- हे पतित-पावन, आओ! 'पतित-पावन' शब्द के साथ 'आओ' क्यों लगाया? क्योंकि (निराकार शिव के प्रैक्टीकल शरीर में) आने के बगैर पावन नहीं बनाय सकते। पतितों को पावन बनाने के लिए इस सृष्टि पर साकार रूप में आना ज़रूर है। क्यों? क्योंकि जो पावन देवताएँ थे,

वो पतित कैसे बने? वो पतित बने अनेकों (देहांकारी हिसकों) के संग के रंग से। अनेक धर्मपिताएँ जैसे-2 ऊपर से नीचे आते गए, उनके संग के रंग में रंगते हुए भारतवासी नीचे गिरते गए। तो भारतवासी ही पुकारते हैं- हे पतित-पावन, आओ! दूसरे धर्म की आत्माएँ नहीं पुकारती हैं- हे पतित-पावन, आओ! दूसरे धर्म वाले न पतित से पूरे पावन बनते हैं और न पतित-पावन बाप को बुलाते हैं। तो यह तो बहुत समय से बुलाते आए हैं। कौन? भारतवासी। कितने समय से बुलाते आए हैं? आधा कल्प (2500 वर्ष) से। उनको यह पता ही नहीं है कि पतित दुनिया कब पूरी होगी। कहते हैं शास्त्रों में ऐसे लिखा हुआ है कि अभी 40 हज़ार वर्ष पतित रहेंगे। बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। अभी तुम समझते हो, हम घोर सोझरे में हैं। बाप ने तुमको अब सोझरे में लाया है। यह 5000 वर्ष में सृष्टि का चक्र पूरा होता है। कल की बात है, तुम राज्य करते थे। बरोबर इन ल.ना. का राज्य था, स्वर्ग था। पावन दुनिया में कोई उपद्रव आदि नहीं होते हैं। उपद्रव कहाँ होते हैं? पतित दुनिया में उपद्रव होते हैं। उपद्रव होते ही हैं (10 मुखों वाले) रावण-राज्य में।

यहाँ तुमको (बेहद का निराकारी सो साकारी) बाप समझाते हैं और तुम सम्मुख कानों से सुनते हो। यहाँ माना कहाँ? (पु.) संगमयुग में, मधुबन में बाप तुमको समझाते हैं और तुम कानों से सम्मुख सुनते हो। कौन सुनते हैं? (चेतन) आत्मा सुनती है। देह-अभिमानी होंगे, वो नहीं सुनेंगे। सुनेंगे भी कौन? जो आत्मा-अभिमानी बच्चे होंगे, बाप के सन्मुख बैठे होंगे, वो सुनेंगे; नहीं तो दूसरे तो, दूसरे एक कान से सुनेंगे और दूसरे कान से (अंधविश्वासी भक्तों की तरह) निकाल देंगे। इसलिए बार-2 मुरली में कहते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों से बात करते हैं; देह-अभिमानियों से बात बाप नहीं करते और वो सुनेंगे भी नहीं।

आत्मा को बड़ी खुशी होती है, हमको (बेहद के दोनों) बाप फिर से आ करके मिला है। 'फिर से' का अर्थ क्या होता है? (कल्प) पहले भी मिला था। 'फिर से' का अर्थ कल्प-कल्प-कल्प से है या 'फिर से' का अर्थ दुबारा से है? (किसी ने कहा-फिर दुबारा) हाँ, कल्प-2 तो चलता ही रहता है, अनेक बार की बात नहीं। 'फिर से' का मतलब होता ही है- दुबारा। तो आत्मा (-अभिमानियों) को खुशी होती है; देह-अभिमानियों को ये खुशी नहीं होगी कि हमको बाप फिर से मिला है। बाप से वर्सा लिया था।

अब बाप (बार-2) कहते हैं- मुझे याद करो। इसमें कोई लिखने-पढ़ने आदि की बात भी नहीं।

जब कोई आते हैं, तो पूछा जाता है- आपका कैसे आना हुआ? तो कहेंगे कि यहाँ के महात्मा से मिलेंगे। क्यों मिलेंगे? तुमको क्या चाहिए? बताओ। कोई भिक्षा चाहिए क्या? अगर तुम संन्यासी हो, तो रोटी-टुकड़ा चाहिए क्या? संन्यासी किसके पास जाते हैं? किसी के पास वो जाते हैं वा रास्ते में मिलते हैं तो रिलीजियस मनुष्य समझते हैं- यह फिर भी पवित्र मनुष्य हैं, इनको भोजन खिलाना चाहिए। इनको भोजन खिलाना अच्छा है। अभी तो वो पवित्रता भी नहीं रही है। गंदगी बहुत है, बिल्कुल ही पतित-तमोप्रधान दुनिया हो गई है। दुनिया में बड़ी गंदगी है।

मनुष्य कितना हैरान होते हैं। यहाँ तो हैरान होने की बात ही नहीं। बाप कहते हैं- लिखने-करने की भी कोई बात नहीं है। यह प्वॉइंट्स आदि भी लिखते हैं किसलिए? क्योंकि बार-2 भूल जाते हैं तो अपने को धारणा हो जाए और दूसरों को हम सुनाय सकें। जैसे डॉक्टर लोगों के पास भी कितनी दवाइयाँ होती हैं ढेर। इतनी सब दवाइयाँ आदि रहती हैं। बैरिस्टर की बुद्धि में कितनी लॉ की प्वॉइंट्स याद रहती हैं। तुमको क्या याद करना है? एक बात याद करनी है, सो भी बड़ी सहज है।

तुम कहते हो- एक शिवबाबा को याद करो; वो कहते हैं- शिवबाबा कैसे आएगा? तुम क्या कहते हो? तुम कहते हो, एक शिवबाबा को याद करो। किसको याद करो? एक शिवबाबा को। एक शिवबाबा! एक शिवबाबा, दो शिवबाबा। उनकी बुद्धि में यह क्यों नहीं आता, एक शिवबाबा आता है! दुनिया क्या समझती है? दुनिया के धर्म गुरू लोग भी क्या समझते हैं? वो समझते हैं कि शिव आता है सृष्टि पर? वो तो कहते हैं- निराकार है, उसका कोई नाम-रूप नहीं है, वो नहीं आता। अच्छा, बाहर की दुनिया वालों की बात छोड़ दो, ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में क्या कहते हैं? शिव आता है क्या? वो शिव को नाम-रूप वाला समझते हैं क्या? वो भी निराकार समझते हैं, बिंदु समझते हैं। तो एक शिवबाबा को याद करो इसका मतलब क्या हुआ- एक बिंदु को याद करो? बिंदु-2 सब आत्माएँ एक जैसी, मनुष्य-आत्माएँ भी सब बिंदु-2 एक जैसी, पशु-पक्षी, कीट, इतने कीड़े हैं, मकोड़े हैं- इनकी सबकी आत्मा भी बिंदु हैं, एक जैसी हैं। तो कौन-से बिंदु को याद करो? कैसे पता चलेगा? मालूम पड़ेगा कि हमने कौन-से बिंदु को याद किया? (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ, मतलब कास्केट में जो बिंदु रखा हुआ है, वो बिंदु परमात्मा का ही है? (किसी ने कुछ कहा-...) तो नहीं मालूम ना! इसका मतलब ये हुआ कि जो बाप बतलाते हैं कि मैं जब आता हूँ, ज्ञान सुनाता हूँ, तब ही पता चलता है कि ये परमात्मा बाप है या कोई मनुष्य आत्मा है। जैसे मुरली में बोला- “पता कैसे चलता है कि इनमें बाप भगवान है? जब ज्ञान सुनाते हैं।” (मु॰26.10.68

पृ०2 मध्य) तो ज्ञान की पेक्यूलियरिटी (विलक्षणता) के आधार पर ही पता चलता है कि ये परमात्म-ज्ञान है, कोई मनुष्य का ज्ञान नहीं हो सकता।

तो बताया, एक शिवबाबा को याद करो। एक शिवबाबा का मतलब ही है कि ज़रूर एक तन में आता है और तन में आकर ही कहता है कि मुझ एक को याद करो। एक की बात ही तब पैदा होती है याद करने की जब किसी एक विशिष्ट तन में प्रवेश करके वो समझाए, हमारे सम्मुख आए। तो वो कहते हैं- शिवबाबा कैसे आएगा? तो निराकार समझते हैं, बिंदु समझते हैं। यह भी तुम्हारे सिवाय और किसको पता नहीं है। क्या? कि पतित-पावन शिवबाबा इस सृष्टि पर पतितों को पावन बनाने के लिए आता ज़रूर है साकार तन में; नहीं तो पतितों को पावन नहीं बनाय सकता।

उनको पता नहीं, ईश्वर कहाँ है? वे तो कहेंगे- नाम-रूप से न्यारा है। कह देते हैं, सर्वव्यापी है। कौन कह देते हैं, दुनिया वाले? कि ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में भी कहते हैं- सर्वव्यापी है? कहाँ कहते हैं? यहाँ तो कोई ब्राह्मण नहीं कहता है कि परमात्मा बाप सर्वव्यापी है, शिवबाबा सर्वव्यापी है। (किसी ने कुछ कहा-...) दृष्टि देते, सो? दृष्टि से सृष्टि सुधरती है सो क्या हुआ? (किसी ने कुछ कहा-...) यहाँ सर्वव्यापी मुख से नहीं कहते हैं; लेकिन प्रैक्टिकल एक्ट ज़रूर ऐसी करते हैं, जिससे ये सबकी बुद्धि में बैठता है कि परमात्मा बाप इन्हीं के द्वारा कार्य करा रहा है; जबकि बाबा ने कहा है कि ● "कोई बच्चा ये नहीं कह सकता कि मेरे अंदर शिवबाबा कार्य कर रहा है। अगर कोई ये कहता है कि मेरे अंदर शिवबाबा है, उससे क्या साबित होता है? कि वो हिरण्यकश्यप है।" (मु.18.8.73 पृ.2 आदि) तो वो कह देते हैं- सर्वव्यापी है, मेरे में है, तेरे में है। तो रात-दिन का फर्क हो जाता है दोनों अक्षरों में। नाम-रूप से न्यारी तो कोई चीज़ होती नहीं है। फिर कह देते- कुत्ते में है, बिल्ली में है। कुत्ता, बिल्ली का मतलब क्या हुआ? कुत्ते जैसी कामी आत्माओं में भी और बिल्लों की तरह लड़ाई लड़ने वालों में भी परमात्मा है। दोनों एक/दो के अपोजिट बातें हो गईं।

तो बाप अपना परिचय दे करके कहते हैं- मुझ बाप को याद करो। गाया भी जाता है- सहज राजयोग। बिना परिचय दिए नहीं कहते हैं कि मुझ बाप को याद करो। परिचय भी देते हैं और तब कहते हैं कि मुझको याद करो। बाबा कहते हैं- 'योग' अक्षर निकाल लो। क्यों? 'योग' तो अक्षर है हठयोगियों का। जैसे माँ बच्चे को याद करती है, बच्चा बाप को याद करता है सामान्य जीवन में, तो ऐसे 'योग' शब्द नहीं, 'याद' कहते हैं। बच्चा माँ को याद करता है तो कोई कठिनाई होती है क्या? उसको पूछने की

दरकार होती है- कैसे याद करें? अगर ये प्रश्न है कि कैसे याद करें, तो ज़रूर इससे साबित होता है कि कठिनाई है- कैसे याद करें, एक समस्या हो गई। तो बाबा कहते हैं- 'योग' अक्षर निकाल लो, याद कहो, याद करो। बोलो, छोटा बच्चा माँ-बाप को देखने से ही झट गले लग जाता है, तो उसको सिखाना-पढ़ाना पड़ता है? पहले सोचेगा क्या कि हमारे माँ-बाप हैं या नहीं हैं? इसमें सोच करने की बात नहीं है, सिर्फ़ शिवबाबा को याद करना है; लेकिन याद कौन करेगा? जिसको पहचान होगी, जिसको पहले से ये ज्ञान होगा, जानकारी मिलेगी।

भक्तिमार्ग में भी तुम शिव पर फूल चढ़ाते थे। सोमनाथ का मंदिर कितना भारी बनाया हुआ है, जो बाद में मोहम्मद गजनवी ने आ करके लूटा। सोमनाथ का मंदिर भारत में नामी-ग्रामी है। सबसे पहले तो शिव की पूजा होनी चाहिए। बच्चों को यह सब नॉलेज अभी बुद्धि में आई हुई है। भल पूजा आदि करते आए हो; परंतु तुमको यह पता नहीं था कि यह जड़ चित्र हैं। पहले क्या समझते थे? जब जड़ शिवलिंग की पूजा करते थे, तो क्या ये बुद्धि में आता था कि ये तो जड़ है, ये परमात्मा बाप का स्वरूप नहीं है! आता था? नहीं आता था। और अभी? अभी बुद्धि में आता है कि मंदिर में जो लिंग रखा हुआ है, वो जड़ यादगार है। यादगार ज़रूर चैतन्य की बनती है। तो ज़रूर चैतन्य कोई हुआ होगा। कैसे? शिवलिंग कैसे चैतन्य होगा? क्योंकि लिंग है बड़ा रूप और उसमें बिंदु है छोटा रूप। छोटा रूप है आत्मा की यादगार जो प्रवेश करती है, शिव ज्योतिबिंदु की यादगार और बड़ा रूप जिस साकार तन में परमात्मा प्रवेश करते हैं, ऐसे साकार तन में प्रवेश करते हैं जो आत्मिक स्टेज में स्थिर हो जाता है। आत्मिक स्टेज का मतलब ही है, जिसको अपनी इन्द्रियों का भान न रहे। तो उसको चित्रकार ने बगैर इन्द्रियों के लिंग रूप में दिखाय दिया है। उसको जगन्नाथ के रूप में भी दिखाया है, श्रीनाथ के रूप में भी दिखाया है। गोल काली लकड़ी है, उसको नाक, आँख, कान बनाय देते हैं। है तो वो लिंगाकार, सम्पूर्ण रूप की यादगार है।

तो बताया कि सहज बहुत है। वो सुख का सागर है। ....ब्र.वि.शं. की आत्माएँ अपनी-2 अलग-2। हर आत्मा की महिमा और पार्ट और एक्ट अलग-2। तो जब पार्ट सबका अलग-2 है, तो महिमा एक जैसी कैसे होगी? तो शिव ज्योतिबिंदु जो पार्ट बजाता है, जो एक्ट करता है, उस आधार पर उसकी महिमा अलग है। ब्र.वि.शं. की भी इतनी महिमा नहीं हो सकती। एक की ही महिमा गाते हैं।

अब तुम बच्चे जानते हो, बाबा आ करके हमको वर्सा दे रहे हैं। जैसे लौकिक बाप बच्चों का लालन-पालन करते हैं। वो पढ़ाते नहीं हैं, पढ़ाई के लिए स्कूल में जाते हैं। फिर वानप्रस्थ में गुरू किया जाता है। आजकल तो छोटे-बड़े सबको गुरू कराय देते हैं। यहाँ तुम बच्चों को कहा जाता है- शिवबाबा को याद करो। क्या मतलब? भक्तिमार्ग में छोटे-2 बच्चों को क्यों गुरू कराय देते हैं? ये भी यादगार कहाँ की चली आ रही है? (किसी ने कुछ कहा-...) कैसे? हाँ, संगमयुग में भी ऐसी परम्परा पड़ गई है कि जो आया और उसको गुरू बनाय दिया। गुरू उसको ज़रूर होना चाहिए। कोई बताने वाला ऐसा गुरू ज़रूर हो, तो उनकी बुद्धि में बैठे कि यही हमको पार लगाने वाला है; लेकिन वास्तव में छोटे-2 बच्चे, वो क्या परमात्म-ज्ञान ले सकते हैं? यहाँ ज्ञान में छोटे बच्चे कौन हैं? जो नए-2 निकलते हैं, उनकी बुद्धि में सीधा-2 नहीं बैठ सकता। हाँ, पूर्वजन्म का प्रारब्ध वाले ब्राह्मण हों, ब्राह्मण आत्मा हो, कोई जल्दी कैच कर ले, वो बात दूसरी है; लेकिन कोई भी नई आत्मा को एडवांस नॉलेज दे करके परमात्मा बाप का सीधा-2 परिचय नहीं दिया जा सकता; इसलिए बाबा पुरानी बात अच्छी बताते हैं कि पहले जब बड़े हो जाते थे, वानप्रस्थी होते थे, तब उनको गुरू करना सुशोभित होता था; लेकिन अब तो छोटे-2 बच्चों को भी। तो वो बात कहाँ की हुई? क्योंकि बात संगमयुग से कनेक्टेड है, जो भक्तिमार्ग में चली आ रही है कि यहाँ तुम बच्चों को कहा जाता है- शिवबाबा को याद करो।

तुम जानते हो, बाबा से हमको सृष्टि के आदि-मध्य-अंत की नॉलेज मिलती है। सबको कहना है- शिवबाबा को याद करो। सबका हक है माना छोटे बच्चों का हक नहीं है शिवबाबा को याद करना? उनका भी हक तो है, सब मेरे बच्चे हैं।

तुम्हारे में भी कोई हैं, जो अच्छी रीति याद करते हैं। कई तो कहते हैं- बाबा, हम किसको याद करें? कैसे याद करें? बिदी को कैसे याद करें? बड़ी चीज़ को याद किया जा सकता है। अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो, वह क्या चीज़ है? वो बड़ी चीज़ है या छोटी चीज़ है? तो कह देते हैं- अखण्ड ज्योति-स्वरूप है। ज्योति कैसी है उसकी? अखण्ड, जिस ज्योति को खण्डित नहीं किया जा सकता। तो क्या कोई स्थूल ज्योति है? वो तो ज्ञान की ज्योति है। वो ज्ञान का ऐसा सागर है, जैसे सागर की थाह नहीं पाई जा सकती, वैसे वो अखण्ड ज्योति है, उस ज्योति का खण्डन नहीं किया जा सकता। दुनिया वाले जितने भी मनुष्य हैं, वो जो भी ज्ञान सुनाएँगे, उस ज्ञान का खण्डन परमात्मा आ करके कर देता है; क्योंकि सब झूठे हैं, झूठे क्या सुनाएँगे? झूठ ही सुनाएँगे। परमात्मा एक सत्य है, तो वो सत्य ही आ करके

सचखण्ड स्थापन करता है, वो सच्ची बात सुनाता है। तो सत्य की तीक्ष्णता इतनी है कि उसके सामने कोई टिक नहीं सकता। तो वो कह देते- अखण्ड ज्योति; परंतु वास्तव में वो कोई अखण्ड ज्योति नहीं है। कोई स्थूल ज्योति की बात नहीं है। अखण्ड ज्योति को याद करना राँग हो जाता है; क्योंकि वो समझते हैं कोई स्थूल ज्योति है। अखण्ड ज्योति को याद करना राँग क्यों हो जाता है? क्योंकि वो उसके अर्थ को नहीं समझते। याद तो एक्यूरेट चाहिए। सिर्फ़ गपोड़े से काम नहीं चलेगा, एक्यूरेट जानना चाहिए। बाप ही आ करके अपना परिचय देते हैं और फिर बच्चों को सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का समाचार भी सुनाते हैं, डिटेल में भी तो नटशैल में भी समझाते हैं।

अब बाप कहते हैं- बच्चे, तुमको पावन बनना है तो उसके लिए एक ही उपाय है। मुझे ही तुम कहते हो 'पतित-पावन', पतितों को पावन बनाने वाला। आत्मा को पावन बनना है। आत्मा ही कहती है- हम पतित बन गए हैं। हम पहले पावन थे, अब पतित हैं। सब तमोप्रधान हो चुके। तो हरेक बात पहले सतोप्रधान, फिर तमोप्रधान होती है। दुनिया की कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो हमेशा सतोप्रधान रहे। दुनिया में हर चीज़ पहले सतोप्रधान, फिर तमोप्रधान होती है। ज्ञान भी। ज्ञान की तरफ इशारा किया कि ज्ञान भी पहले सतोप्रधान होता है, फिर बाद में तमोप्रधान होता जाता है। आत्मा खुद जानती है- मैं पतित बनी हूँ, मुझे आ करके पावन बनाओ। शांतिधाम में पतित होते नहीं; यहाँ पतित हैं। क्या कहा? मधुबन में पहुँचते हैं, तो बाप का घर है ना! वहाँ अवस्था ऊँची चढ़ जाती है और मधुबन से नीचे उतरे, अवस्था नीची चली जाती है। क्यों? क्योंकि बाप के घर का प्रभाव है, वो वातावरण का प्रभाव है, व्यक्तियों का प्रभाव है; इसलिए वहाँ आत्माएँ पतित नहीं होतीं। उसकी यादगार भक्तिमार्ग में क्या चलती है? तीर्थों में जाते हैं, मंदिरों में जाते हैं, तो तीर्थों में जाते हैं तो पवित्र रहते हैं और वापस हो करके आते हैं, तो फिर पतित बन जाते। तो ये यादगार यहाँ की है। तो पतित हैं, तो ज़रूर दुःखी हैं। जब पावन थे तो सुखी थे। तो आत्मा ही कहती है- हमको पावन बनाओ, तो हम दुःख से छूट जाएँ।

तुम समझते हो, आत्मा ही सब-कुछ करती है और आत्मा किसे कहा जाता है? मन-बुद्धि (रूपी शक्ति) को। तो मन-बुद्धि की यहाँ स्टेज ऐसी बन जाए कि आत्मा दुःख ग्रहण न करे, न दुःख दे और न दुःख ले, तो समझो कि आत्मा पावन बन रही है और पतित आत्मा? पतित आत्मा दुःख देगी भी और दुःख लेगी भी।

तो तुम बच्चों को बनना है- आत्म-अभिमानी, देह होते आत्म-अभिमानी बनना है। क्या कहा? ऐसे नहीं, देह छूट जाए और फिर आत्म-अभिमानी कहा जाए। इसका कोई प्रूफ नहीं; क्योंकि दुनिया में लोग, बुद्धिमान बाप की बुद्धिमान औलाद क्या कहेगी? क्या करेगी? प्रूफ चाहेगी हर बात का। अगर परमात्मा बाप भी एवरप्योर है, तो उसका भी प्रूफ चाहिए- वो एवरप्योर कैसे है? किस एक्ट के आधार पर वो एवरप्योर है? नहीं तो दुनिया नहीं मानेगी। तो देह भी हो और आत्म-अभिमानी भी हो। देह नहीं है और फिर कोई कह दे- आत्मा है, तो इसका कोई प्रूफ नहीं। रावण के राज्य में देह होते भी देह-अभिमानी होते हैं। आत्म-अभिमानी अभी ही बाप बनाते हैं।

इस समय आत्मा पतित है, दुःखी है, तो पुकारते हैं कि आओ! यह भी तुम जानते हो। क्या कहा? सुभाष भाई। बाप को कब तक पुकारते हैं कि आओ? हे पतित-पावन, आओ- ये पुकार कब तक करते हैं? भारतवासी ही पुकारते हैं, आओ। कब तक पुकारते हैं? आओ का मतलब है- दूर है। अभी हम बच्चों ने ऐसी स्टेज धारण नहीं की है कि अव्यक्त हो करके, उस अव्यक्त बाप को अपने नज़दीक अनुभव कर सकें। जब तक हम ये अनुभव ही नहीं कर रहे हैं, अव्यक्त बाप को अव्यक्त आत्मा के नज़दीक नहीं अनुभव कर रहे हैं, समीपता का अनुभव नहीं कर रहे हैं, तो हम दूर हुए ना! बाप के समीप पहुँचना है; कि समीप पहुँच गए? समीप पहुँच गए! मधुबन में हैं तब तक समीप पहुँच गए और मधुबन से नीचे उतरे तो, दूर हो गए, नहीं। तो पुकारते हैं- आओ। कब पुकारते हैं? जब तक आत्मा पतित है, दुःखी है, तब तक पुकारना है।

भक्तिमार्ग में पुकारना होता है या ज्ञानमार्ग में पुकारना होता है? भक्तिमार्ग में पुकारते हैं। पुकार होती है- हे पतित-पावन, आओ! गुलज़ार दादी में भी बुलाएँगे, तो अंदर से आवाज़ है ना कि बाबा आए। तो 'आए' का मतलब क्या है कि भक्तिमार्ग चल रहा है या ज्ञानमार्ग है? भक्तिमार्ग है। तो सुभाष भाई अब बुलाना बंद करेंगे या बुलाते रहेंगे! (किसी ने कुछ कहा-...) कहाँ चला गया? दूसरी सभा में चला गया, तो बुलाएँगे? कौन चला गया- शिवबाबा? स्टूडेंट दूसरी शाखा में चले गए, तो बुलाएँगे? अच्छा, जो अपनी शाखा वाले हैं, वो बुलाते नहीं हैं! जो भारतीय शाखाओं वाले, वो तो सबसे जास्ती बुलाते हैं- हे पतित-पावन, आओ। भारतवासी सबसे जास्ती दुःखी और पतित बनते हैं। तो ये भी तुम जानते हो, क्या? कि बुलाना-करना कब तक होता है, जब तक आत्मा पतित और दुःखी है, तो पतित-पावन बाप को बुलाती है।

ड्रामा प्लैन अनुसार पतित से पावन और पावन से पतित बनते ही आए हैं। ये संगमयुग में भी ये चक्र शूटिग पीरियड में चलता रहता है, क्या? पतित बनते हैं, फिर पावन बनते हैं; फिर पावन बनते हैं, फिर पतित बनते हैं। तो चक्र फिरता ही रहता है।

अभी तुम्हारी बुद्धि में बैठा है, हमारे 84 जन्म कैसे हुए। अब यह बात भूलो मत। तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो करके रहो। कौन-सा चक्रधारी? स्वदर्शन चक्रधारी। स्व माना आत्मा, दर्शन माना देखना। किस चीज़ को देखना? चक्र को। जो 84 का चक्र है उसको बुद्धि में फिराना कि हमने कैसे-2, किस-2 युग में, कहाँ-2 जन्म लिए, कौन-2 साथी बने, वो सब बुद्धि में साक्षात्कार होता रहे।

उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में हमको सारी नॉलेज है। तुम समझते हो, बेहद के बाप से हम बेहद का वर्सा ले रहे हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं- तुमको एक बाप को ही याद करना है, बाप को याद करना और रोटी दो टुकड़े खाना है। क्या कहा? क्या करना है? एक बाप को याद करना है और रोटी-टुक्कड़ खाना है। इससे जास्ती हमको कुछ इस दुनिया में अब प्राप्ति की इच्छा नहीं है। मीठे-2 सिकीलधे बच्चों को घड़ी-2 कहते हैं- बच्चे, पेट के लिए सिर्फ़ दो रोटी, ये काफ़ी है। रोटी-टुक्कड़ खाना है। मुरली से हर समस्या का समाधान होता रहता है। जैसे-2 बच्चों के प्रश्न उठते हैं उन प्रश्नों का समाधान मुरली में बाबा स्वतः ही देते रहते हैं। पेट कोई जास्ती थोड़े ही खाता है। साहूकार होगा, वो भी दो रोटी खाएगा और गरीब होगा, वो भी दो रोटी खाएगा; लेकिन कोई-2 ब्राह्मण पेटू बहुत होते हैं, उनका दो रोटी खाने से काम नहीं चलता। तो कोई दाल-रोटी खाते हैं, बस। 10 रुपये में भी मनुष्य पेट भर लेता है, तो कोई 10 हज़ार में भी पेट पालते हैं। गरीब लोग क्या खाते हैं? नमक और रोटी, फिर भी हट्टे-कट्टे रहते हैं। क्यों? खाते हैं इतना थोड़ा और हट्टे-कट्टे कैसे रहते हैं? (किसी ने कुछ कहा-...) आत्मा शक्तिशाली की बात नहीं है, निश्चित रहते हैं। संन्यासी लोग भी बहुत-से ऐसे देखे जाते हैं, रोटी-टुक्कड़ माँगते रहते हैं, खाते रहते हैं और हट्टे-कट्टे, मोटे-ताज़े रहते हैं। फिर क्यों? क्योंकि निश्चित रहते हैं। तो भिन्न-2 चीज़ें मनुष्य खाते हैं तो और ही बीमार पड़ जाते हैं। डॉक्टर लोग भी कहते हैं- एक प्रकार का खाना खाओ तो बीमार नहीं होंगे। भोजन भी कैसा हो? व्यभिचारी न हो,...भोजन भी अव्यभिचारी हो, भाँति-2 का नहीं। डॉक्टर लोग भी कहते हैं, तो बाप भी समझाते हैं- रोटी-टुक्कड़ खाओ। जो मिले उसमें खुश रहो। दाल-रोटी जैसी और कोई चीज़ होती नहीं। भोजन में क्या पास कर दिया? दाल-रोटी और आलू। मुरली में बताया, दाल-भात और आलू- ये सबसे अच्छा भोजन है। जास्ती लालच भी नहीं रहना चाहिए।

संन्यासी लोग क्या करते हैं? घर-बार छोड़ करके जंगल में चले जाते हैं, तत्व को भी परमात्मा समझ याद करते हैं। समझते हैं- ब्रह्म में लीन हो जाएँगे। उनकी समझ कैसी है? ब्रह्म में लीन हो जाएँगे। ब्रह्म में कौन रहता है? ब्रह्म कहो, ब्रह्मा कहो, ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में कौन-2 रहता है? जो भी मनुष्य-आत्माएँ, जन्म कहाँ से लेती हैं? ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट से ही सबका जन्म होता है। सो ब्रह्म से ही सब आत्माएँ आती हैं। तो समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जाएँगे। वास्तव में क्या ब्रह्म में लीन होना होता है? ब्रह्म तो जड़ तत्व है। जड़त्व में हमको लीन होना है क्या? माता साकार होती है और बाप निराकारी स्टेज वाला होता है। जो जितना निराकारी स्टेज में होगा, वो उतना ही मनन-चितन-मंथनशील होगा और जितना ही साकारी होगा, देह-अभिमानी होगा, उतना ही मनन-चितन-मंथन उसका कम चलेगा। ब्रह्मा बाबा से भी जास्ती मनन-चितन-मंथन मम्मा का चलता था। तो ब्रह्म तत्व कहो या ब्रह्मा तत्व कहो, वो साकार तत्व तो नहीं है ब्रह्म तत्व; लेकिन जड़त्वमय ज़रूर है। तो जड़त्व में हमको लीन नहीं होना है। हमको लीन काहे में होना है? परमात्मा बाप जो चैतन्य है, उस बाप के संकल्पों में हमको अपने को (संकल्पों को) मर्ज़ कर देना है, जो बाप का संकल्प सो बच्चे का संकल्प। तो ब्रह्म में लीन होने की बात ही नहीं। आत्मा तो अमर है, लीन होने की बात नहीं है। बाकी आत्मा पवित्र-अपवित्र बनती है।

तुमको कितना अच्छा ज्ञान मिला है! तुम्हीं प्रारब्ध भोगते हो। फिर यह ज्ञान भूल जाता है, फिर चढ़ाई उतरनी होती है। अब तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान बैठा हुआ है। कौन-सा सारा ज्ञान? कि हम 84 जन्म कैसे भोगते हैं। यह पार्ट कब भी कोई का बंद नहीं होता है। यह बना-बनाया ड्रामा है।

500 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ हैं, एक भी जास्ती व कम नहीं हो सकती। क्या कहा ? मनुष्य-आत्माएँ कितनी बताईं? 500 करोड़। मुरली में तो कभी-2 आया है- 600 करोड़। 700 करोड़, 750 करोड़ भी बताए हैं, (किसी ने कुछ कहा-...) ज़्यादा-कम बताया है; फिर यहाँ क्यों कह दिया- 500 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ हैं, एक भी जास्ती-कम नहीं हो सकती। क्या बाबा भी झूठ बोलता है? (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ, 500 करोड़ जो हैं, वो मनन-चितन-मंथन करने वाली आत्माएँ हैं और बाकी मक्खी-मच्छर की तरह आते हैं और चले जाते हैं...। उनको वास्तव में मनुष्य-आत्मा नहीं कहेंगे। अभी दुनिया की आबादी कितनी है? (किसी ने कुछ कहा-...) 800 करोड़? जगदीश भाई तो हहऽऽऽ, (किसी ने कुछ कहा-...) अभी 500 करोड़ चल रही है, तो वो भी अभी पूरी नहीं हुई है; लेकिन इससे भी आगे बढ़ेंगी और जिस समय आगे बढ़ेंगी, उस समय वो आत्माएँ क्या होंगी? आईं और <u>2/4</u> वर्षों के अंदर गईं। तो उन्हें मनन-

चितन-मंथन करने का जैसे मौका ही नहीं है। बच्चा क्या मनन-चितन-मंथन करेगा! तो मनुष्य-आत्माओं की बात कही।

बना-बनाया ड्रामा फिरता ही रहता है। यह कह नहीं सकते कि भगवान ने कब और कैसे और कहाँ बैठ करके बनाया। कोई ये भी प्रश्न करते हैं- क्या? ये ड्रामा कब बना? किसने बनाया? कैसे बना? कहाँ बनाया? लेकिन ये तो अनादि ड्रामा है, बना-बनाया है! ये कभी बनाया नहीं जाता, न कोई इसको बैठ करके बनाता है। यह तो चलता ही आता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती ही रहती है। इन बातों को कोई समझते नहीं हैं।

तुम जानते हो, हम ड्रामा के प्लैन अनुसार आए हैं, अब फिर से ड्रामा प्लैन अनुसार राज्य ले रहे हैं। यह बातें और कोई नहीं समझ सकते। और कोई माना? तुम बच्चे जो बाप के सम्मुख बैठते हो, वही बच्चे समझ सकते हैं, जो पूरे 84 जन्म लेने वाले हैं। कितने हैं पूरे? 84 जन्म लेने वाले। सिर्फ़ 9 लाख मनुष्य-आत्माएँ ऐसी हैं, जो बाप के सम्मुख बैठ करके सुनती हैं, वही पूरे 84 जन्म लेने वाले मनुष्य हैं, सच्चे अर्थों में मनन-चितन-मंथन करने वाले मनु की औलाद और बाकी तो, जो 83 जन्म लेने वाले हैं या उससे जो कम जन्म लेने वाले हैं, वो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हो जाएँगे; क्योंकि वो पूरी 16 कला वाली सम्पूर्ण आत्माएँ नहीं बनती हैं। तो तुम्हारे अलावा और कोई इन बातों को समझ भी नहीं सकता; क्योंकि देवताएँ इशारे से समझते हैं। तो तुम हो जो समझते हो।

पूछा जाता है- ड्रामा सर्वशक्तिवान है वा ईश्वर सर्वशक्तिवान है? कौन है सर्वशक्तिवान? तो कहते हैं- मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। कौन कहते हैं? बाप कहते हैं- मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ, पतितों को पावन बनाने के लिए मुझे आना पड़ता है। पड़ता है माना कम्पल्शन है बाप के लिए भी। चाहता नहीं है कि मैं पतित तन में आऊँ, पतित दुनिया में आऊँ, गंदे तन में आऊँ और गंदी दुनिया में आऊँ, गंदों के सम्पर्क में, संसर्ग में आऊँ। चाहता नहीं है; लेकिन आना पड़ता है। इसके बगैर उसका काम चल नहीं सकता।

तो तुम सतयुग में सुखी बन जाते हो और मैं भी जा करके विश्रामी होता हूँ परमधाम में। तुम शेर-कूल्हे पर चढ़ जाते हो अर्थात् अपने पाँव पर खड़े हो जाते हो। तुम्हारी शेर पर सवारी भी दिखाई जाती है।

तुम जानते हो, सेकेण्ड-बाई-सेकेंड जो भी चलता है, वह ड्रामा की नूँध है। तुम बच्चे कितनी अच्छी नॉलेज लेते। अब सिर्फ़ बाप और वर्से को याद करो, कागज़-पेन्सिल आदि की कोई दरकार नहीं है। कागज़-पेन्सिल के पीछे पड़ गए। (किसी ने कुछ कहा-...) सबने बंद कर दिया है? नहीं, यहाँ तो लिए बैठे हैं। कागज़-पेन्सिल आदि की कोई दरकार नहीं। बाबा भी पढ़ते हैं, यह तो कुछ रखते नहीं हैं। कौन? ब्रह्मा बाबा, ये तो कोई कागज़-पेंसिल आदि रखते नहीं हैं। सिर्फ़ (निराकार शिव) बाप को याद करना है और वर्सा मिल जाएगा। कितनी सहज बात है! याद से तुम एवरहेल्दी बन जाएँगे। लास्ट (महाविनाश) में स्टेज क्या होगी? ये कोई भी साधन- कागज़ और पेन्सिल भी काम नहीं आएँगी। आखरीन क्या चीज़ काम में आएगी? याद ही काम में आएगी, मंसा सेवा से ही सारे कार्य होंगे; कोई भी साधन लेने की हमको दरकार नहीं रहेगी। तो यह धारणा की बातें हैं, लिखने से क्या फायदा होगा! यह तो सब विनाश हो जाएगा। तो सब खलास कर दो। ये सब विनाश हो जाएगा, ये लिखने से फायदा नहीं होगा, ये कागज-पेन्सिल लेने की दरकार नहीं है, ऐसे क्यों कहा? ये लास्ट (मिसाइल रूपी मूसलों चतुर्थ विश्वयुद्ध) की स्टेज बताई। अभी ये स्टेज बता दी कि तुम बिना साधनों के अभी नहीं चल सकते; लेकिन लास्ट स्टेज तुम्हारी ये होगी कि तुम्हें कोई भी साधन की दरकार नहीं होगी; परंतु कोई डल बुद्धि हैं। इसका मतलब अभी कौन-सी बुद्धि हैं? अभी डल बुद्धि हैं, तो याद करने के लिए लिखते हैं; क्योंकि बार-2 भूल जाते हैं। जब बुद्धि पूरी पवित्र बन जाती है तो फिर कुछ भी लिखने-करने आदि की दरकार नहीं रहती। सबसे बड़ी डायरी कौन-सी हो जाएगी? बुद्धि रूपी डायरी ही सबसे बड़ी हो जाएगी। तो कोई बात याद करनी होती है, तो गाँठ बाँध लेते हैं। तुम भी गाँठ बाँध लो। क्या? एक बात एक बार सुनी और बुद्धि में गाँठ पड़ गई। शिवबाबा और वर्से को याद करना है। यह तो बहुत सहज बात है।

योग अर्थात् याद। कहते हैं- बाबा, याद नहीं ठहरती है, हम योग में कैसे बैठें? अरे! लौकिक बाप की याद तो उठते-बैठते, चलते-फिरते बनी रहती है, तो तुमको ये प्रश्न क्यों पैदा होता है- कैसे याद करें? तुम भी सिर्फ़ याद करो, तो बस, बेड़ा पार है। बताया फिर भी नहीं। जिनका प्रश्न है, तो आखिर क्या समाधान है? समाधान है कि जैसे बच्चा सहज-2 बाप को याद करता है। क्यों याद करता है? क्योंकि प्रैक्टिकल में उसको बाप मिला हुआ है। अगर प्रैक्टिकल में मिला हुआ न हो और फिर माँ कहे कि तुम बाप को याद करो, तो याद करेगा? नहीं याद कर सकेगा? ना! उसको कोई-न-कोई स्वरूप और साधन देना पड़ेगा। तो ऐसे ही यहाँ भी है, जो बच्चे कहते हैं कि बाप को कैसे याद करें, तो बाप जवाब देते हैं कि

बच्चे, सूक्ष्म रूप याद नहीं आता है, तो तुम क्या करो? बड़े रूप को याद करो। उस बड़े रूप को याद करने से भी तुम्हारे पाप कर्म भस्म होंगे। बड़ा रूप माना? कोई लिग जड़ रूप को थोड़े ही याद करने की बात बताई। जिस साकार तन में परमपिता प्रवेश करता है, वो भी अविनाशी है या विनाशी है? मुकर्रर रथ विनाशी है या अविनाशी है? टेम्परेरी रथ की बात नहीं; मुकर्रर रथ, वो भी अविनाशी है। सारी दुनिया का नाश होगा; लेकिन उस स्वरूप का विनाश नहीं होगा। कुछ ऐसी विशेष आत्माएँ हैं, इस सृष्टि रूपी रंगमंच की बीज-रूप आत्माएँ, जो नई दुनिया को जन्म देने वाली हैं। तो सारी दुनिया का विनाश होगा; लेकिन उन (बीज रुद्राक्ष जैसी) आत्माओं के अपने स्वरूप का विनाश नहीं होगा, उनके (देहभान भरे नं. वार) शरीर (पूरे) नाश को नहीं पाएँगे। क्या होगा? (नं. वार) कंचन काया बनेंगे। तो तुम भी सिर्फ़ बाप को याद करो, बस! तुम्हारा बेड़ा पार है। बेड़ा माना? शरीर रूपी नइया को ही बेड़ा कहा जाता है। अच्छा! मीठे-2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। देह-अभिमानी बच्चों को नमस्ते नहीं करते। किसको झुकते हैं? नमन माना झुकना।

(तुम बच्चे) पुरुषार्थ में मेकप करते रहो। मौका मिलता है तो मेकप करो। कमाई तुम्हारी कितनी भारी है! कोई-2 तो ऐसे हैं कितना भी समझाओ, तो भी उनकी बुद्धि में बैठेगा नहीं। बाप कहते हैं- ऐसे नहीं बनना है। अपना कल्याण करो। बाप की श्रीमत पर चलो। बाप की है श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ मत, जिस मत से तुम पुरुषोत्तम बनते हो। क्या बनते हो? पुरुष माने आत्मा। आत्माएँ कितनी हैं? 500 करोड़ और तुम क्या बनते हो? 500 करोड़ मनुष्य-आत्माओं में जो गिनी-चुनी आत्माएँ हैं, कोटों में से कोई निकलते हैं और उन कोई में से भी कोई निकलते हैं। तो कोटों में से कोई और कोई में से भी कोई जो माला बनती है , वो माला हर धर्म में आज भी याद की जाती है, सिमरण की जाती है/स्मरण की जाती है। वो माला के मणके इतने श्रेष्ठ हैं, जिनको कहते हैं- पुरुषोत्तम, नम्बरवार। तो तुमको बाप पुरुषोत्तम बनाते हैं। तो जो बाप पुरुषोत्तम बनाते हैं, उनकी मत पर चलना है, और कोई दूसरे की मत पर नहीं चलना है। ये है एम-ऑब्जेक्ट। अच्छा! मीठे-2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओम् शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025